

उत्पन्ना एकादशी व्रत कथा

युधिष्ठिर ने पूछा – प्रभु! पवित्र एकादशी तिथि कैसे अस्तित्व में आई? इसे इस संसार में पवित्र क्यों माना जाता है? तथा यह देवताओं को कैसे प्रिय हुई? भगवान ने कहा – कुंतीपुत्र! प्राचीन काल की कथा है, सत्ययुग में मुर नाम का एक राक्षस रहता था। वह बड़ा ही अद्भुत, बड़ा भयंकर तथा सभी देवताओं को भयभीत करने वाला था। उस दुष्टात्मा महासुर ने जो मृत्यु का रूप धारण किया था, इंद्र को भी परास्त कर दिया था। सभी देवता उससे पराजित होकर स्वर्ग से निकाल दिए गए थे तथा संशय और भय में पृथ्वी पर भटक रहे थे। एक दिन सभी देवता महादेव जी के पास गए।

वहां इंद्र ने भगवान शिव को सारा वृत्तांत सुनाया। इंद्र ने कहा – महेश्वर! ये देवता स्वर्ग से निकाले जाने के पश्चात पृथ्वी पर भटक रहे हैं। इनका मनुष्यों के बीच रहना अच्छा नहीं है। देव! कृपया कोई उपाय बताएं। देवताओं को किसकी सहायता लेनी चाहिए? महादेव जी ने कहा – देवराज। उस स्थान पर जाएं जहां सबको आश्रय देने वाले तथा सबकी रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहने वाले भगवान गरुड़ध्वज विराजमान हैं। वे आपकी रक्षा करेंगे।

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं – युधिष्ठिर! महादेव जी के वचन सुनकर परम बुद्धिमान देवराज इंद्र समस्त देवताओं के साथ वहाँ गये। भगवान गदाधर क्षीर सागर के जल में शयन कर रहे थे। उन्हें देखकर इंद्र हाथ जोड़कर उनकी स्तुति करने लगे। इंद्र ने कहा – देवदेवेश्वर! आपको नमस्कार है। देवता और दानव दोनों ही आपकी वंदना करते हैं। पुण्डरीकाक्ष! आप दानवों के शत्रु हैं। मधुसूदन! हमारी रक्षा कीजिए। जगन्नाथ! मुर नामक दैत्य से भयभीत होकर समस्त देवता आपकी शरण में आये हैं। भक्तव्रती! हमारी रक्षा कीजिए। देवदेवेश्वर! हमारी रक्षा कीजिए। जनार्दन! हमारी रक्षा कीजिए, हमारी रक्षा

कीजिए। दैत्यों का नाश करने वाले कमलनयन! हमारी रक्षा कीजिए। प्रभु! हम सब आपकी शरण में आये हैं। हम आपकी शरण में आये हैं। भगवन्! शरण में आये देवताओं की आप सहायता कीजिए। देव! आप ही पति हैं, आप ही बुद्धि हैं, आप ही कर्ता हैं और आप ही कारण हैं। आप ही समस्त लोकों की माता हैं और आप ही इस जगत के पिता हैं। भगवन्! देवदेवेश्वर! आप शरणागतों पर दया करने वाले हैं! देवताओं! भयभीत होकर हम आपकी शरण में आये हैं। प्रभु! अत्यंत भयंकर स्वभाव वाले मुर नामक दैत्य ने समस्त देवताओं को पराजित करके स्वर्ग से निकाल दिया है।

इन्द्र के वचन सुनकर भगवान विष्णु ने कहा- 'देवराज! वह दैत्य कैसा है? उसका रूप और बल क्या है तथा वह दुष्ट कहाँ रहता है?'

इन्द्र ने कहा- हे देवेश्वर! पूर्वकाल में ब्रह्माजी के वंश में तालजंघ नामक एक महान दैत्य उत्पन्न हुआ, जो बड़ा भयंकर था। उसका पुत्र मुर दैत्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वह भी बड़ा भयंकर, बड़ा बलवान और देवताओं के लिए बड़ा भयानक है। चन्द्रावती नाम की एक प्रसिद्ध नगरी है, वह उसी नगरी में रहता है। उस दैत्य ने सब देवताओं को परास्त करके स्वर्ग से निकाल दिया है। उसने दूसरे इन्द्र को स्वर्ग के सिंहासन पर बैठा दिया है। उसने अणि, चन्द्रमा, सूर्य, वायु और वरुण को भी भिन्न बना दिया है। जनार्दन! मैं तुम्हें सब कुछ बता रहा हूँ। उसने सबको भिन्न बना दिया है। उसने देवताओं को सब स्थानों से वंचित कर दिया है।

इन्द्र की बात सुनकर भगवान जनार्दन को बड़ा क्रोध आया। वे देवताओं के साथ चन्द्रावतीपुरी गए। देवताओं ने देवी को देखा, दैत्यराज बार-बार गर्जना कर रहा था; उससे पराजित होकर सब देवता दसों दिशाओं में भाग गए। अब दैत्य ने भगवान विष्णु की ओर देखकर कहा, 'खड़े हो जाओ, खड़े हो जाओ।' उसकी ललकार सुनकर भगवान के नेत्र क्रोध से लाल हो गए। उन्होंने कहा- 'अरे दुष्ट दैत्य! मेरी इन भुजाओं को तो देख।' ऐसा कहकर श्री विष्णु ने अपने दिव्य बाणों

से अपने सामने पड़े दुष्ट दैत्यों का संहार करना आरम्भ कर दिया। दैत्य भयभीत हो गए। पाण्डवपुत्र! तत्पश्चात् श्री विष्णु ने अपने चक्र से दैत्य सेना पर आक्रमण किया। सैकड़ों योद्धा टुकड़े-टुकड़े होकर मर गए। इसके बाद भगवान मधुसूदन बदरिकाश्रम गए। वहां सिंहावतो नाम की एक गुफा थी, जो बारह योजन लम्बी थी। उस गुफा में एक ही द्वार था।

उसमें भगवान विष्णु शयन कर रहे थे। दैत्य मुर भगवान को मारने का प्रयत्न कर रहा था। वह उसका पीछा करता रहा। वहां पहुंचकर वह भी उसी गुफा में प्रवेश कर गया। भगवान को वहां शयन करते देख उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने सोचा, 'यह वही भगवान है, जो दैत्यों को डराता है। अतः मैं इसका वध अवश्य करूंगा।' युधिष्ठिर जब ऐसा विचार कर रहे थे, तभी भगवान विष्णु के शरीर से एक कन्या प्रकट हुई, जो अत्यन्त सुन्दरी, सौभाग्यवती तथा दिव्यास्त्रों से सुसज्जित थी। वह भगवान के तेज का ही एक अंश थी। उसका बल और पराक्रम महान था। युधिष्ठिर! दैत्यराज मुर ने उस कन्या को देखा। युद्ध का विचार करके कन्या ने दैत्य से युद्ध के लिए प्रार्थना की। युद्ध छिड़ गया। वह कन्या सभी प्रकार की युद्ध-विद्या में निपुण थी! उसकी गर्जना से मुर नामक वह महादैत्य भस्म हो गया। दैत्य के मारे जाने पर भगवान की नींद खुली। दैत्य को भूमि पर पड़ा देखकर उन्होंने पूछा- 'यह मेरा शत्रु अत्यन्त बूढ़ा और भयंकर था, इसे किसने मारा?'

वह कन्या स्वयं एकादशी थी। उसने कहा, 'प्रभु, यदि आप प्रसन्न हैं, तो आपकी कृपा से मैं समस्त तीर्थों में प्रधान, समस्त दुष्टों का नाश करने वाली तथा सब प्रकार की सिद्धि देने वाली देवी हो जाऊँगी। जनार्दन! जो मनुष्य आपकी भक्तिपूर्वक मेरे दिन का व्रत करेंगे, उन्हें सब प्रकार की सिद्धि प्राप्त हो। माधव! जो मनुष्य उपवास करके, रात्रि में अथवा केवल एक बार भोजन करके मेरा व्रत करेंगे, उन्हें आप धन, धर्म और मोक्ष प्रदान करें।'

श्रीविष्णु ने कहा - कल्याणी! तुम जो कुछ कहोगी, वह सब सत्य होगा।

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा – युधिष्ठिर! ऐसा वरदान पाकर महाव्रत एकादशी बहुत प्रसन्न हुई। दोनों पक्षों की एकादशी समान रूप से शुभ होती है। इसमें शुक्ल और कृष्ण का भेद नहीं करना चाहिए। यदि उदय काल में थोड़ी एकादशी, मध्य में पूरी द्वादशी तथा अन्त में कुछ त्रयोदशी हो, तो वह 'त्रिस्पृशा' एकादशी कहलाती है। वह भगवान को बहुत प्रिय है। यदि कोई त्रिस्पृशा एकादशी का व्रत करे तो उसे एक हजार एकादशी व्रत करने का फल मिलता है और इसी प्रकार यदि कोई द्वादशी को व्रत करे तो उसका फल हजार गुना माना जाता है।

अष्टमी, एकादशी, षष्ठी, तृतीया और चतुर्दशी- यदि ये पहले की तिथियों से ज्ञात हों तो इनका व्रत नहीं करना चाहिए। इनमें अगली तिथि के संयोग से ही व्रत करने का नियम है। यदि पहले दिन दिन के साथ-साथ रात में भी एकादशी हो और दूसरे दिन प्रातःकाल केवल दण्ड एकादशी हो तो पहली तिथि को त्यागकर केवल दूसरे दिन की द्वादशी एकादशी का ही व्रत करना चाहिए।

यह विधि मैंने दोनों पक्षों की एकादशी के लिए बताई है। जो मनुष्य एकादशी का व्रत करता है, वह वैकुण्ठ धाम को जाता है, जहां भगवान गरुड़ध्वज निवास करते हैं। जो मनुष्य हर समय एकादशी माहात्म्य का पाठ करता है, उसे एक हजार गायों के दान का पुण्य मिलता है। जो मनुष्य दिन में या रात्रि में भक्तिपूर्वक इस माहात्म्य को सुनते हैं, वे ब्रह्महत्या आदि पापों से निःसंदेह मुक्त हो जाते हैं। एकादशी के समान पापों का नाश करने वाला दूसरा कोई व्रत नहीं है।

जाती है।